सत्य के अभाव में जहाँ मिथ्या का प्रचार किया जाता है उस मिथ्या को बेपर्दा करना मेरा काम बन गया है। इसके लिये मैं जानता हूँ कोइ मुझे श्रेय नहीं देगा। परन्तु सत्य यदि केवल 'सुनहरा भ्रम' नहीं है तो सच्चाई को प्रकट करना होगा।

एम. एन. रॉय

सम्पूर्ण जीवन का सबसे उपयोगी समय उपेक्षणीय नहीं था विशेषतः इसलिये कि यदि मैं चाहता तो वैयक्तिक सफलता मेरे चरण चूमती। यहाँ तक कि हिन्दुस्तान की सीमा से बाहर भी राजनीतिक प्रसिद्धी मेरी पहुँच में थी। आत्म श्लाघा से बचते हुए मेरे लिये यह कहना सम्भव है कि भौतिक ऐश्वर्य की ही यदि मुझे खोज होती तो जिस काम में भी मैं लग जाता उसमें सफलता के सर्वोच्च्य शिखर पर पहुँचना मेरे लिये आसान था। परंतु, इसके विपरीत मैंने उसी रास्ते को चुनना श्रेयस्कर समझा जिसमें पन्द्रह वर्ष के देश–निकाले के बाद मुझे छहः वर्ष का कारावास मिला जहाँ की यातनाएँ कदाचित् मेरी आयु को और भी अधिक कम कर देंगी।

एम. एन. रॉय

फ्रेग्मेंन्ट्स ऑफ़ ए प्रिज़्नर्स डायरी–भाग दो

ज्ञापन

मेरी स्थिति पर सहानुभूति दर्शाते हुए जब जवाहरलाल नेहरू ने अपनी 'आत्म–कथा' में लिखा: ''राष्ट्रीय हिन्दुस्तान उसका कोई उपयोग नहीं ले सकता।'' यह राष्ट्रीय हिन्दुस्तान के लिए शर्म की बात है, मेरे लिए नहीं। जिस 'राष्ट्रीय हिन्दुस्तान' की ओर नेहरू का संकेत है उसकी प्रकृति इस कथन से प्रकट हो जाती है। मैं गांधीवादी नहीं हूँ परन्तु क्या राष्ट्रीयता गांधीवाद में सीमित हो गई है? कौन इस तथ्य को इंकार कर सकता है कि मेरा संपूर्ण जीवन, चाहे वह कितना ही नगण्य रहा हो, राष्ट्रीय स्वतंत्रता के उद्देश्य के प्रति समर्पित रहा है। फिर राष्ट्रीय हिन्दुस्तान क्यों मेरा उपयोग नहीं ले सकता? क्योंकि जिनकी स्वतंत्रता की बात मैं कहता हूँ वह ९८% की स्वतंत्रता की बात है जो निश्चय ही नेहरू द्वारा कथित 'राष्ट्रीय हिन्दुस्तान' का उद्देश्य नहीं रहा है।

एम. एन. रॉय

फ्रेग्मेंन्ट्स ऑफ़ ए प्रिज़्नर्स डायरी–भाग दो

स्वर्गीय एम. एन. राय निस्सन्देह असाधारण गम्भीर चिन्तक थे। राय एवं रायवादी विचारधारा के लोगों ने समय समय पर जो विचार रखे उनके बारे में चाहे कोई कुछ भी सोचता हो परन्तु जिस दृष्टिकोण का वे प्रतिनिधित्व करते हैं वह विचारशील लोगों के लिए चिन्तन योग्य है।

— डा. राजेन्द्र प्रसादभारत में सशस्त्र क्रन्ति के अग्रदूत श्री जतीन्द्रनाथ मुखर्जी अंग्रेज़ी साम्राज्यवादी सत्ता से लोहा ले रहे थे। उनके संपर्क में अनेक देशभक्त आए जिनमें एक चौदह वर्ष का विद्यार्थी था। इस विद्यार्थी ने देश को विदेशी शासन से मुक्ति दिला कर शोषित व पद–दलित देशवासियों की दीन–हीन दशा सुधारने की प्रतिज्ञा की। यह विद्यार्थी नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य था जो आगे चल कर मानवेन्द्रनाथ राय या अधिक लोकप्रिय रूप में एम.एन. राय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

बचपन

एम. एन. राय का जन्म बंगाल प्रान्त के चौबीस परगना नाम के ज़िले के

अरवलिया गांव में २१ मार्च सन् १८८७ में श्री दीनबन्धु भट्टाचार्य के घर हुआ था। उनकी माता का नाम बसन्तकुमारी था। दीनबन्धु भट्टाचार्य की पहली पत्नि का देहान्त हो गया था। बसन्तकुमारी उन्की दूसरी पत्नि थीं जिनकी मानवेन्द्रनाथ चौथी सन्तान थे। दीनबन्धु अरवलिया गांव के विद्यालय में अध्यापक थे। माता–पिता ने पुत्र का नाम नरेन्द्रनाथ रखा।

अरवलिया के विद्यालय में प्रारंभिक पढ़ाई समाप्त करने के बाद सन् १८९७ में बालक नरेन्द्र को इसी ज़िले के कोडलिया गांव के हरिनामी एंग्लो संस्कृत स्कूल में भर्ती करवाया गया। वहां शिक्षा प्राप्त करने के बाद नरेन्द्रनाथ को नेशनल कॉलेज, कलकत्ता में पढ़ने के लिए भेजा गया। एन्ट्रेंस की परीक्षा उत्तीर्ण कर नरेन्द्रनाथ ने बंगाल टेकनिकल इन्स्टीट्यूट में प्रवेश लिया। नरेन्द्रनाथ एक प्रतिभावान विद्यार्थी थे। इन्स्टीट्यूट में पढ़ाई में सर्वप्रथम रहने के कारण उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

सशस्त्र क्रन्तिकारी आन्दोलन में भाग

जब नरेन्द्रनाथ बंगाल टेक्निकल इन्स्टीट्यूट में पढ़ रहे थे, उन्हीं दिनों वे सन् १९०१ में जतीन्द्रनाथ मुखर्जी के सम्पर्क में आए और सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा देश को स्वतंत्रता प्राप्त कराने के उद्देश्य से उनके साथ हो गये।

थोड़े ही समय में नरेन्द्रनाथ अपनी सच्चाई, ईमानदारी और कार्य–तत्परता के कारण जतीन्द्रनाथ के विश्वास–पात्र बन गये और उनका नाम उस दल के नेताओं में गिना जाने लगा।

जतीन के दल में सम्मिलित होने के पश्चात् नरेन्द्रनाथ के नेतृत्व में सबसे पहले कलकत्ते से प्रायः १२ मील की दूरी पर चिन्गरी पोटा गांव राजनैतिक डकैती की गई। इस डकैती के मुकदमे में नरेन्द्रनाथ भी पकड़े गये परन्तु बाद में रिहा कर दिये गये। इसके पश्चात् सन् १९१० में हावड़ा षड़यन्त्र केस के सम्बन्ध मे उन्हें पुनः पकड़ा गया परन्तु रिहा कर दिये गये। सन् १९१५ में गार्डन रीच डकैती के मसले में उन्हें गिरफ़्तार किया गया तथा ज़मानत पर रिहा किया गया। ज़मानत होने पर भी वे भाग निकले तथा विदेशी सत्ता के विरुद्ध षढ़यन्त्र में लगे रहे।

सन् १९१५ में भारतीय क्रान्तिकारियों ने जर्मनी से स्वर्ण व शस्त्र की

सहायता लेकर विदेशी शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने की योजना बनाई तथा इस योजना को कर्यान्वित करने का कार्य जतीन ने नरेन्द्रनाथ को सौंपा। नरेन्द्रनाथ अप्रैल १९१५ में जावा स्थित जर्मन राजदूत एम. एस. मैवरिक से सोन व शस्त्र लाने के लिये जावा गये तथा जून माह में लौट कर भारत आए। वे कुछ धन तो लेकर आए मगर शस्त्र नहीं मिले। अगस्त माह में उन्हें पुनः जर्मन सहायता से प्राप्त शस्त्र लाने के लिए जावा भेजा गया परन्तु फिर भी शस्त्र नहीं मिल पाए और इधर सन् १९१५ में जतीन्द्रनाथ मुखर्जी अंग्रेज़ी सम्राज्यवादियों के सैनिकों से लड़ते हुए शहीद हो गये। जतीन की मृत्यु से देश की स्वतन्त्रता के लिये सशस्त्र आन्दोलन को भारी धक्का ही नहीं पहुँचा वरन् अंग्रेज़ शासकों ने इस आन्दोलन को पूर्णतया कुचल दिया। नरेन्द्र के लिए देश में लौट आने से अब इस समय कोई लाभ नहीं था। नरेन्द्र देश में सशस्त्र क्रान्ति को सफ़ल बनाने के उद्देश्य से शस्त्रों की खोज में चीन और जापान गये परन्तु शस्त्र लाने का उद्देश्य पूरा नहीं हो सका क्योंकि जर्मनी ने वायदा करके भी नरेन्द्रनाथ को शस्त्र नहीं दिये। जर्मनी से शस्त्र न मिलने का कारण नरेन्द्र को बाद में ज्ञात हुआ कि जर्मन साम्राज्यवाद भारतीय क्रान्तिकारियों को ऐसी शर्तों पर शस्त्र देना चाहता था जिससे भारत अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद के चंगुल से निकलकर जर्मन साम्राज्यवाद के चंगुल में फंस जाये। परन्तु नरेन्द्रनाथ ने ऐसा नहीं होने दिया, इसलिए जर्मन राजदूत उनसे झूठे वायदे करता रहा और अंत में शस्त्र नहीं दिये।

नरेन्द्रनाथ जब पहली बार जावा रवाना हुए तो जहाज़ में उनके पास आकर एक पुलिस अफ़सर बैठ गया और उसने देश की राजनीति एवं सशस्त्र आन्दोलन के बारे में नरेन्द्र से बातें की। परन्तु, नरेन्द्रनाथ ने उसको यह भान नहीं होने दिया कि वे स्वयं क्रान्तिकारी हैं। अन्त में पुलिस अफ़सर ने नरेन्द्रनाथ से कहा कि आजकल भारत के पढ़े–लिखे लोगों, विशेषतः विद्यार्थियों में विद्रोह की भावना बहुत फैल गई है। तब नरेन्द्र ने जानबूझ कर उससे पूछा : 'क्या उनमें से एक मैं तो नहीं हूँ?' पुलिस अफ़सर ने कहा : 'तुम्हारे जैसा सीधा आदमी षड़यन्त्रकारी नहीं हो सकता।' नरेन्द्र ने प्रशंसा के स्वर में कहा : 'आप गिद्ध दृष्टि वाले मालूम होते हैं।' पुलिस अफ़सर अपनी प्रशंसा से खुश होकर चला गया तथा जावा तक पहुँचने में नरेन्द्र को कोई अड़चन नहीं आई।

जर्मन शस्त्रों को पाने के प्रयत्न में जावा, चीन और जापान में असफल होकर नरेन्द्रनाथ संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की ओर चल पड़े और फ़ादर मार्टीन के नाम से सन् १९१६ में सेन फ्रांसिस्को पहुँचे। वहाँ से स्टेनफ़ोर्ट (कलिफ़ोर्निया गये जहाँ वे दो माह रहे। वहाँ उनका ऐवलिन नाम की एक लड़की से परिचय हुआ और दोनों का सम्पर्क बढ़ गया। वे दोनों प्रणय सूत्र में बंध गए तथा नरेन्द्रनाथ ने फ़ादर मार्टीन से बदल कर अपना नाम मानवेन्द्रनाथ रॉय रख लिया।

इसके पश्चात् मानवेन्द्रनाथ रॉय न्यूयार्क गए। तब प्रसिद्ध भारतीय नेता लाला लाजपत रॉय न्यूयार्क में थे। मानवेन्द्रनाथ की उनसे मित्रता हो गयी। अपने उद्देश्य की सफ़लता के लिये वे बहुत से जर्मन लोगों से मिले। रॉय के कार्यकलापों से पुलिस को उन पर सन्देह हो गया तथा सन् १९१७ में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। ज़मानत पर छोड़ने की अपील करने पर उन्हें २४ घन्टे में ज़मानत लाने के लिए मुचलका भर कर छोड़ा गया। परन्तु, ज़मानत का प्रबन्ध करने के बदले मानवेन्द्र न्यूयार्क छोड़कर मैक्सिको को फ़रार हो गये।

समाजवादियों के सम्पर्क में

मैक्सिको में वे वहाँ के समाजवादियों के सम्पर्क में आये और मैक्सिको के राष्ट्रपति कैरेंजा से उनकी मित्रता हो गई। वहाँ के समाजवादियों में वे इतने प्रसिद्ध हो गये थे कि मानवेन्द्रनाथ रॉय अगस्त–सितंबर १९१९ में मैक्सिकन सोशलिस्ट पार्टी के पहले अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए। इसी समय रॉय का सम्पर्क कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के एक एजेन्ट बोरोडीन के साथ हुआ। मानवेन्द्रनाथ रॉय ने कुछ समय बाद मैक्सिको में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।

लेनिन के निमन्त्रण पर रूस को प्रस्थान

श्री रॉय द्वारा मैक्सिको में किये गये कार्यों की ख्याति लेनिन के कानों तक पहुँची और उन्होंने मानवेन्द्रनाथ रॉय को रूस आने का निमन्त्रण दिया। मानवेन्द्रनाथ ने अपना नाम गार्शिया बदल लिया और नवंबर १९१९ में मैक्सिको से रूस के लिये रवाना हो गये। रास्ते में वे जर्मनी में ठहरे और जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी से सम्पर्क स्थापित किया। उनकी जर्मनी के चोटी के कम्युनिस्ट नेताओं––आगस्ट थैलेमियर और हैनरिख बैन्डर से मित्रता हो गई। राष्ट्रवादी अराजक नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य अब तक

अनेक अनुभवों एवं मार्क्सवाद के अध्ययन के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के व्यक्ति बन गये थे।

सन् १९२० में मानवेन्द्रनाथ रूस पहुँच गये और वहाँ कम्युनिस्ट महान् नेता लेनिन से मिले। मानवेन्द्रनाथ राय की तस्वीर लेनिन के दिमाग़ में बूढ़े सफेद बाल व दाढ़ी मूंछों वाले एक भारतीय क्रान्तिकारी के रूप में थी। परन्तु अपने सामने मानवेन्द्रनाथ नामधारी एक बिल्कुल नवयुवा पुरुष को देखकर लेनिन आश्चर्यचकित रह गये। लेनिन ने राय के साथ सम्राज्यवादी शासन के नीचे दबे उपनिवेशों पर बातचीत की। बातचीत के मध्य में राय ने लेनिन की विचारधारा से अपना मतभेद प्रकट किया। मतभेद प्रकट करने पर भी लेनिन ने राय से आग्रह किया कि वे अपने विचार होने वाली कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की दूसरी कांग्रेस के समक्ष रखें। लेनिन ने कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के उपनिवेश संबंधी कमीशन में राय का नाम रख दिया।

कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की द्वितीय महासभा में भाग

जुलाई–अगस्त १९२० में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की दूसरी महासभा हुई जिसमें राय ने सक्रिय भाग लिया। इसी कांग्रेस में उन्होंने उपनिवेश व साम्राज्यवाद पर लेनिन के विचारों से मतभेद प्रकट किया। मानवेन्द्रनाथ राय का मत था कि उपनिवेशों में पूंजीपति वर्ग क्रान्तिकारी कार्य नहीं करेगा। साम्राज्यवाद को अपनी आर्थिक मजबूरियों के कारण उद्योग–धन्धे खोलने पड़ेंगे। साम्राज्यवादियों द्वारा उपनिवेशों में उद्योग–धंधे बढ़ाने पर उपनिवेशों के स्थानीय पूंजिपतियों को भी उनमें हिस्सा मिलेगा। वे खुल कर साम्राज्यवाद का विरोध नहीं करेंगे वरन् क्रान्ति में बाधक सिद्ध होंगे। अतः उपनिवेशों में क्रान्ति मज़दूर वर्ग के संगठन से, किसान और गरीब मध्यम वर्ग के संगठन से ही आ सकती है। लेनिन का मत इसके विपरीत था। उसका कथन था कि साम्राज्यवादी उपनिवेशों में उद्योग–धन्धों को पनपने से रोकेंगे तथा सामंतवादी अर्थ–व्यवस्था को बनाये रखेंगे। अतः उपनिवेशों का पूँजीवादी वर्ग साम्राज्यवाद से लड़ाई लड़ने में क्रान्तिकारी सिद्ध होगा।

मानवेन्द्रनाथ राय के मत में प्रथम महायुद्ध के बाद साम्राज्यवाद की परिस्थिति बदल गई थी। उत्पादन के नये साधनों का आविष्कार हो जाने के कारण साम्राज्यवादी देशों के पूँजीपतियों के लिये यह आवश्यक हो गया कि वे सम्पूर्ण

औद्योगिक व्यवस्था को बदल दें क्योंकि अन्य पूँजीवादी देशों, विशेषतः अमेरिका के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असफल होने की आशंका हो गई थी। अतः साम्राज्यवादियों के लिये स्वदेश में एकत्रित हुई पूँजी को औद्योगिक यंत्रों में बदलना आवश्यक हो गया जिसके लिये मूल वस्तुओं (Capital Goods) के उत्पादन के उद्योग लगाने आवश्यक हो गये। उपनिवेशों में पूँजी भेजना संभव नहीं रहा। दूसरी ओर, संसार के बाज़ार में तेज़ प्रतिस्पर्धा के कारण लाभ कम हो गया। इस प्रकार, साम्राज्यवादी देशों में पूँजी कम इकट्ठी होने लगी तथा उनको उपनिवेशों की ओर देखना पड़ा।

उपनिवेशों में उत्पादन के साधन के रूप में भूमि काम में लाई जा चुकी थी। अतः साम्राज्यवादियों के लिए इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं रहा कि वे उपनिवेशों में उद्योग खोलें। इसके अतिरिक्त साम्राज्यवादियों को अपनी उत्पादन वस्तुएँ बेचने की आवश्यकता थी और यह वस्तुएँ तभी खरीदी जा सकती थीं जब कि खरीददार के पास देने के लिये कीमत हो। साम्राज्यवादियों की उत्पाद्य वस्तुओं की बिक्री के लिये उपनिवेश के लोगों की क्रय–शक्ति बढ़ना आवश्यक था। अतः अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद के अपने स्वार्थ के कारण उनके द्वारा भारत में औद्योगिक क्रान्ति लाना अनिवार्य हो गया।

लेनिन का अभिमत था कि साम्राज्यवादी उपनिवेशों में उद्योग खोलने के लिए कभी तैयार नहीं हो सकते क्योंकि इसका तत्पर्य यही है कि साम्राज्यवाद स्वयं अपने हाथों अपनी कब्र खोद लेगा जो कि स्वभाविक नहीं। परन्तु, मार्क्स के अनुसार लेनिन की यह विचारधारा सही नहीं थी। मर्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार पूँजीवाद अपने में अन्तर्विरोध पैदा कर ही खत्म होने वाला था। राय ने इस अन्तर्विरोध को बतलाते हुए अपना मत रखा। राय से मतभेद होते हुए भी लेनिन ने राय के मत को भी स्वीकार करने पर सहमति दी और कौन–सा सिद्धान्त सही है इसका निर्णय समय की कसौटी पर छोड़ दिया। पाठक गण समझें कि सन् १९४७ में भारत के स्वतन्त्र होने से पहले बहुत–से उद्योग–धन्धे भारत में खुल चुके थे और भारतीय पूँजीवाद ने बराबर उसका लाभ उठाया तथा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रान्ति नहीं की। समय ने मानवेन्द्रनाथ राय के मत को सही सिद्ध किया।

कम्युनिस्ट जगत् में राय की प्रतिष्ठा

उदार हृदय लेनिन ने मानवेन्द्रनाथ राय की प्रतिभा एवं भविष्य की घटनाओं

को आंकने की सूझ की सराहना की तथा कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सर्व–शक्तिमान् कार्यकारिणी के 'स्याल ब्यूरो' (छोटी सी समिति) में उन्हें अपना सहयोगी बनाया। साथ ही राय सेन्ट्रल एशियाटिक ब्यूरो ताशकंद के सदस्य भी रहे। भारत से 'खिलाफ़त आन्दोलन' के संबंध में गए कई भारतीय मुसलमानों को उन्होंने साम्यवाद की शिक्षा दी तथा सन् १९२१ में उन्होंने मास्को में प्राच्य श्रमिक विश्व–विद्यालय की नींव डाली जिसके वे डायरेक्टर बने।

साम्यवादी जगत् में राय की प्रतिष्ठा इतनी अधिक बढ़ गई थी कि सन् १९२२ में वे कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए तथा सन् १९२४ में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के ही सदस्य नहीं वरन् उसकी प्रिसीडियम में भी चुने गये। कम्युनिस्ट जगत में किसी को इससे बड़ी प्रतिष्ठा नहीं मिल सकती थी एवं राय के बाद आज तक कोई भारतीय इस प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं कर सका है।

भारतीय क्रान्ति में निरन्तर अभिरुचि

कदाचित् कोई यह समझ बैठे कि मानवेन्द्रनाथ राय कम्युनिस्ट विचारों में पड़ कर भारतीय स्वतंत्रता के उद्देश्य को भुला बैठे होंगे, तो यह सोचना गलत होगा। सन् १९२० से जब तक उनका कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल से संबंध–विच्छेद नहीं हुआ, तब–तक उनका मुख्य कार्य भारत में साम्यवादी आन्दोलन को प्रोत्साहित करना व उसका विस्तार करना रहा। इसके लिये राय रूस से आर्थिक सहायता, पुस्तकें, समाचार–पत्र एवं अन्य साहित्य ही नहीं भेजते रहे वरन् भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के वाम–पक्ष को प्रभावित करने के लिए अनेक व्यक्तियों को तैयार कर भेजते रहे। इसी समय उन्होंने अपनी पुस्तक 'इन्डिया इन ट्रांजिशन' (India in Transition) लिखी और एक समाचार–पत्र 'वेंगार्ड आफ़ इन्डियन इंडिपेन्डेंस' (Vanguard of Indian Independence) को निकालते रहे। इस समाचार–पत्र के मुखपृष्ठ पर यह उद्देश्य–वाक्य लिखा रहता था—'क्रान्ति जनता के लिए, जनता क्रान्ति के लिए नहीं' (Not masses for revolution but revolution for masses) इस समाचार–पत्र की प्रतियां वे जहाजी लोगों के साथ भारत भेजते रहे। यह समाचार–पत्र तत्कालीन युग में भारत में साम्यवाद आन्दोलन का पथ–प्रदर्शक था।

फ़रवरी १९२४ में भारत के कुछ कम्युनिस्ट नेताओं के विरुद्ध कानपुर

षड़यन्त्र मुकदमा चलाया गया जिसमें एम. एन. रॉय भी एक अभियुक्त थे। इधर जनवरी १९२४ में उन्हें जर्मनी से देश निकाला दे दिया गया था। वे जर्मनी से ज्यूरिच, वहाँ से ऐनेन्सी और ऐनेन्सी से पेरिस जाकर रहे। जून १९२४ में रॉय पुनः कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की प्रिसिडियम में चुने गये तथा उनको औपनिवेशिक कमीशन का सदस्य बनाया गया। जनवरी १९२५ में वे पेरिस में गिरफ़्तार कर लिये गये और उन्हें निर्वासित कर दिया गया। इस वर्ष उनका ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी से मतभेद हो गया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का पथ–प्रदर्शन अब तक रॉय करते आ रहे थे परन्तु, भारत ब्रिटेन का उपनिवेश था इस आधार पर ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के पथ–प्रदर्शन की ज़िम्मेवारी का दावा किया। साम्राज्यवादी न्यस्त स्वार्थ एवं साम्यवाद के प्रचार के कार्य को एक ही स्तर पर रखने की संकुचित मनोवृत्ति का रॉय ने विरोध किया।

सन् १९२५–२६ में रॉय का उनकी पत्नी एवलिन से सम्बन्ध–विच्छेद हो गया।

चीन की साम्यवादी–क्रान्ति से संबंध

नवम्बर–दिसम्बर १९२६ में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की कार्यकारिणी के सातवें प्लीनम की बैठक हुई। रॉय ने इस बैठक में अपना मत रखा कि अब साम्राज्यवाद के विरुद्ध मोर्चे में बड़े–बड़े पूँजीपतियों का सहयोग लेना उचित नहीं है। साम्राज्यवाद के विरुद्ध किसान–वर्ग एवं अन्य क्रान्तिकारी वर्ग के सहयोग से संघर्ष चलना चाहिए। इस मत को लेकर रॉय ने बोरोडिन और माओ–शी–तुंग की नीति का विरोध करते हुए अपना मत प्रस्तुत किया कि च्यांग–काई–शेक की पार्टी क्वो मितांग के साथ रहना उचित नहीं है। अंत में बोरोडिन व माओ की नीति के कारण ही च्यांग–काई–शेक चीन के कम्युनिस्टों की शक्ति को नष्ट करने में सफल हुआ। यहाँ पर यह स्मरणीय है कि चीन में कम्युनिस्ट राज्य की स्थापना च्यांग–काई–शेक से अलग होकर चीन के किसानों व मध्यम वर्ग को साथ लेने के बाद च्यांग–काई–शेक से संघर्ष करके ही हुई। सन् १९२७ में रॉय को कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की ओर से चीन भेजा गया था परन्तु, वहाँ के नेताओं ने उनकी नीति का अनुसरण नहीं किया। एक बार वह क्रान्ति प्रतिक्रिया में परिणत को गई।

ट्राटस्की तथा स्टालिन से मतभेद

जुलाई–अगस्त १९२७ में रॉय चीन से लौट कर मास्को आये। उस समय स्टालिन और ट्राटस्की के बीच संघर्ष पराकाष्ठा पर पहुँच चुका था। सन् १९२७ के अन्त में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की कार्यकारिणी की बैठक हुई। ट्राटस्की का मत था कि समाजवाद एक देश में नहीं पनप सकता। जब तक सोवियत देश के चारों ओर पूँजीवादी देश हैं तब तक सोवियत की अर्थ–व्यवस्था का पतन पूँजीवाद की ओर होगा। ट्राटस्की को आशा थी कि इस संघर्ष में रॉय उसका साथ देंगे। परन्तु भवना और व्यक्तिगत सम्बन्ध कभी रॉय के विचारों पर असर नहीं डाल सकते थे। अतः रॉय ने ट्राटस्की के सम्मुख एक प्रश्न रखा कि वे दोनों में से कौन–सी बात पसन्द करेंगे—क्या समाजवाद को ध्येय मान कर उसे दृढ़ बनाने के लिये जब तक दूसरे देशों में भी समाजवाद की स्थापना न हो हर सम्भव प्रयत्न किया जाय अथवा, सोवियत संघ के हाथों जो जन शक्ति मिली है उसे पुनः पूँजीवाद के हाथ में सौंप दिया जाय और समाजवाद की स्थापना के लिए उस समय तक ठहरा जाय जब तक कि संसार के सभी देशों में क्रांति एक साथ सफल हो। क्या ट्राटस्की दूसरा विकल्प अपनाने के लिये प्रस्तुत होंगे ? ट्राटस्की ने इस पर 'ना' कहा। रॉय ने इस पर कहा : ''मुझे ट्राटस्की के विरुद्ध मत देना होगा क्योंकि उन्होंने ऐसी नीति अपनाई है जिसका नतीजा वे स्वयं नहीं जानते। इस बैठक के निर्णय से ट्राटस्की व ज़िनोविध को रूस की कम्युनिस्ट पार्टी से निष्कासित कर दिया गया।

रॉय का लेनिन से कई बार मतभेद रहा। रॉय कभी ट्राटस्की का पक्ष भी लेते थे। फिर भी रॉय और स्टालिन में घनिष्ट मित्रता थी। परन्तु, ट्राटस्की को पार्टी से निष्कासित करने के बाद स्तालिन ने संकीर्ण घुटवादी नीति अपनाई। रॉय ने स्टालिन की मित्रता का ख्याल न रख कर उनकी संकीर्ण नीति का विरोध किया।

कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल से सम्बन्ध विच्छेद

इधर जर्मनी में नाज़ीवाद और इटली में फ़ासिस्टवाद कायम हो गए थे और उन्नति चाहने वाले सभी वर्गों को इनका खतरा हो गया था। इस समय संसार की सभी प्रगतिशील शक्तियों को सम्मिलित कर पूँजीवाद के विरुद्ध मज़दूर, किसान और मध्यम वर्ग का विस्तृत संयुक्त मोर्चा बनाना ज़रूरी हो गया। केवल 'लाल जातिवाद' से

काम नहीं चल सकता था। रॉय ने यूरोप और एशिया में 'लाल जातिवाद' की संकीर्ण नीति अपनाने का विरोध किया।

स्टालिन का मानसिक गठन अब ऐसा हो गया था कि चाहे वह सही हो या गलत उसे अपना विरोध कतई पसंद नहीं था। परन्तु, रॉय की तार्किकता एवं उनके व्यक्तित्व का प्रभाव भी कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल में कम नहीं था। फ़रवरी १९२८ में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की ९ वीं प्लीनम की बैठक के समय रॉय मास्को में रुग्णावस्था में थे। उनकी दशा चिन्ताजनक हो रही थी। परन्तु, स्टालिन ने अपने अन्य राज्नीतिक विरोधियों की तरह रॉय की बलि बोल दी थी। अतः मास्को में रॉय की चिकित्सा भी बन्द हो गई। किसकी हिम्मत थी कि आतंककारी स्टालिन के इशारों के विरुद्ध जाकर अपने सिर पर खतरा मोल लेता। अन्त में मार्च १९२८ मेम्म रॉय के कुछ मित्रों व उनसे सहनुभूति रखने वालों ने रॉय का नाम बदल कर उन्हें बर्लिन मेम्म मित्रों के पास भेज दिया जहाँ उनकी चिकित्सा होने लगी। रॉय अभी बीमार ही थे और इस बीच जुलाई से सितंबर १९२८ तक कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल का छठा अधिवेशन हुआ जिसमें स्टालिन की नीति अपनाई गई और उसे कम्युनिस्ट पार्टी का सर्वेसर्वा बना दिया गया। रॉय ने स्टालिन की नीति का विरोध किया और उसे वामपक्षीय पथभ्रष्टता बतलाई। उन्होंने बहुत-सी कम्युनिस्ट पार्टीयों के पत्रों में स्टालिन की नीतियों के विरुद्ध लेख लिखे। रॉय ने एक 'क्राइसिस इन कॉमिन्टर्न (Crisis in Comintern) नामक लेख लिखा जिसमें उन्होंने कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की कार्य-कारिणी से अपना संबंध विच्छेद कर लिया। स्टालिन की आज्ञानुसार जुलाई १९२९ के पश्चात् कम्युनिस्ट पत्रों ने रॉय के लेख छापने बंद कर दिये। सन् १९२९-३० में उन्होंने एक पुस्तक 'चीन में क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति' लिखी। इसी समय उनका ऐलेन गोटस्चाक से सम्पर्क हुआ।

लौट कर भारत में

सन् १९३० के अंत में रॉय जर्मनी से फर्ज़ी पासपोर्ट लेकर रवाना हुए और दिसंबर १९३० में वे बम्बई पहुँचे। भारत में आकर पहले वे छुपे रूप में कार्य करने लगे। उन्होंने अपने भारतीय सहयोगियों से सम्पर्क किया और कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल

की छटी कांग्रेस की वामपक्षीय पथभ्रष्टतापूर्ण नीति को छोड़ कर सही नीति अपनाने पर ज़ोर दिया। उन्होंने छुपे तौर पर क्रान्तिकारी साहित्य प्रकाशित किया। इलाहबाद जाकर वे नेहरू से मिले और उनके निमंत्रण पर सन् १९३१ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में गये। उस सम्मेलन में कांग्रेस ने जो भारतीयों के 'मूल अधिकारों' का प्रस्ताव पास किया उसके लेखक मानवेन्द्रनाथ रॉय थे, श्रेय भले ही प. नेहरू ने लिया हो।

छः वर्ष का कारावास

जुलाई १९३१ में रॉय को गिरफ़्तार कर लिया गया तथा उन पर कानपुर षढ़यन्त्र मुकदमा चलाया गया। रॉय को १२ वर्ष की कैद की सज़ा दी गई परन्तु, अपील करने पर सज़ा कम कर छः साल की कर दी गई। इस कारावास में रॉय चुप बैठने वाले नहीं थे। जेल में रहते हुए भी वे बाहर क्रांतिकारी आन्दोलन को बल देने में सहयोग देते रहे। वे जेल से पत्र और क्रांतिकारी साहित्य बाहर भेजते रहे। जेल में उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया। यह अध्ययन उनके दार्शनिक विचारों के निर्माण में सहायक हुआ। उन्होंने 'आधुनिक विज्ञान के दार्शनिक परिणाम' (Philosophical Consequences of Modern Science)एक महाग्रन्थ लिखा जो अभी तक शायद पूरी तरह से प्रकाशित न्हीं है।

रेडिकल कांग्रेसमैन लीग

२० नवम्बर १९३६ को रॉय जेल से रिहा हुए। बाहर आकर वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने तथा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य चुने गये। अप्रैल १९३७ में उन्होंने 'इन्डिपेन्डेन्ट इन्डिया' (Independent India) नामक अंग्रेज़ी साप्ताहिक निकालना आरम्भ किया जो अब 'रेडिकल हयूमेनिस्ट' के नाम से प्रकाशित होता है। इसी वर्ष उन्होंने भारत में एलेन गोटस्चाक से विवाह किया जो बाद में एलेन रॉय के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

कांग्रेस में रह कर रॉय ने प्रयत्न किया कि कांग्रेस कमेटियों को अन्य कमेटियों व नगरों की वार्ड कमेटियों का रूप दिया जाय तथा उन्हें सक्रिय बना कर

वास्तविक लोकतंत्र का आधार बनाया जाए। इन कमेटियों के द्वारा हम जिस प्रकार का राज्य भारत में चाहते हैं उसका प्रचार किया जाए। स्वतंत्र भारत के लिए एक संविधान बनाया जाए और उस पर ग्राम–कमेटियों और वार्ड–कमेटियों में विचार–विमर्श किया जाए। इसके उपरांत ग्राम ग्राम एवं नगर नगर के जन सम्मेलनों में उस संविधान को जनता से स्वीकार कराया जाए और फिर एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया जाए जिसकी कार्यकारिणी अंग्रेज़ों से राज्य–सत्ता ग्रहण करने वाली विधान सभा का कार्य करे। इस प्रकार बनाए गये राज्य का संगठन विदेशी शासन से किसी समय सत्ता ग्रहण करने को तत्पर रहेगा। जनता की यह संगठित शक्ति विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने में समर्थ होगी। इस कार्यक्रम को कांग्रेस के रंगमंच से कार्यान्वित करने के लिए रॉय ने जून १९३९ में कांग्रेस के भीतर ही 'लीग ऑफ़ रैडिकल कांग्रेस मैन' की स्थापना की।

रैडिकल डेमोक्रटिक पार्टी

सितंबर १९३९ में द्वितीय विश्व–युद्ध छिड़ गया। आरंभ में इस महायुद्ध का मोड़ व उद्देश्य स्पष्ट नहीं था। परन्तु, इंगलैंड की जनवादी शक्ति एवं फ्रांस के पतन ने इस विश्व–युद्ध के स्वरूप को स्पष्ट कर दिया कि यह फ़ासिस्ट ताकतों के विरुद्ध जनवादी शक्तियों का युद्ध है तथा फासिस्ट शक्तियों को हराने से साम्राज्यवाद कमज़ोर हो जाएगा। रॉय ने कहा कि इस दशा में भारतीय जनता को युद्ध में फासिस्ट विरोधी शक्तियों का साथ देकर अपनी शक्ति को मज़बूत बनाना चाहिए। युद्ध समाप्त होने के पश्चात् निर्बल साम्राज्यवाद भारत को स्वतंत्रता देने के लिए बाध्य होगा क्योंकि स्वयं ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आर्थिक व्यवस्था इतनी जर्जरित हो गई होगी कि उपनिवेशों के आर्थिक शोषण के लिए अब उसके पास कोई पूँजी शेष नहीं रही होगी। इस प्रश्न पर रॉय और कांग्रेस के बीच मतभेद होने से रॉय अपने अनुयायियों के साथ कांग्रेस से विलग हो गए तथा दिसंबर १९४० में उन्होंने रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी तथा इंडियन फेडरेशन ओफ़ लेबर की स्थापना की। इन संस्थाओं ने फासिस्ट विरोधी मोर्चा बनाया, साम्राज्यवाद को युद्ध लड़ने के लिए तत्पर कर फासिस्ट शक्तियों के नाश में सहयोग दिया तथा अंत में जर्जरित ब्रिटिश साम्राज्यवाद को भारत छोड़ कर १५ अगस्त १९४७ को जाना पड़ा।

द्वितीय विश्व–युद्ध के दौरान में ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने भारत में इस उद्देश्य से क्रिप्स–मिशन भेजा कि यदि भारत युद्ध में सहयोग दे तो कांग्रेस व अन्य राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों को वायसराय की कार्यकारिणी में ले लिया जाय और युद्ध समाप्त होने के उपरान्त भारत को स्वतंत्र कर दिया जाएगा। परंतु, भारत के राष्ट्रवादी नेता युद्ध में सहयोग देने को किसी भी शर्त पर तैयार नहीं थे, चाहे उनकी बला से भारत व दुनिया के अन्य देश फसिस्टों के चंगुल में आकर सदियों के लिए फिर से परतंत्र हो जाते।

सन् १९४४ में इंडियन फेडरेशन ऑफ लेबर के ज़रिये कान्फ्रेंस में 'जन–योजना' (People's Plan) को एय जनता के जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने के उद्देश्य से रखा गया, तथा इसी वर्ष के दिसंबर माह में रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी की कलकत्ता कान्फ्रेंस में स्वतंत्र भारत के संविधान कि रूप–रेखा तैयार की गई। रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी ने इस योजना और संविधान का जनता में प्रचार किया तथा इसमें संदेह नहीं कि स्वतंत्र भारत के संविधान एवं विकास–योजनाओं पर इन दोनों का प्रभाव पड़ा।

साम्यवाद से आगे कदम

लेनिन से हुए मतभेद से लेकर रॉय का कम्युनिस्टों से समय समय पर जो मतभेद रहा उस पर विचार करने से रॉय इस निर्णय पर पहुँचे कि मार्क्स को कम्युनिस्ट घोषणा–पत्र (Communist Manifesto) लिखे हुए एक शताब्दी बीत गई है। इसके बीच संसार की आर्थिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों में अनेक परिवर्तन हो गए हैं तथा विज्ञान ने अनेक नई खोजों के बाद नये सिद्धान्त स्थापित किये हैं जिनका हमारी सामाजिक तथा दर्शनिक विचारधाराओं पर प्रभाव पड़ा है। इन प्रभावों का विवेचन कर रॉय इस निर्णय पर पहुँचे कि मार्क्सवाद ने वर्गहीन समाज के साथ जिस राज्य–विहीन समाज की कल्पना की है वह एक स्वप्न मात्र ही है। मनुष्य–समाज में किसी न किसी प्रकार की व्यवस्था सदैव रखनी होगी अतः समाज राज्य–विहीन नहीं रह सकता। राज्य की ऐसी व्यवस्था अवश्य हो सकती है जो समाज कि इकाई से भिन्न न प्रतीत हो (A state Co-terminus with society) सोवियत रूस में यद्यपि समाजवादी अर्थव्यवस्था है परन्तु वह संसार का सबसे शक्तिशाली राज्य है तथा वहां

वैयक्तिक स्वतंत्रता सबसे कम है। इससे प्रकट होता है कि आर्थिक दशा के सुधरने से ही मनुष्य स्वतंत्र नहीं होता वरन् स्वतंत्रता की इच्छा रखने एवं उसके लिये प्रयत्नशील होने से ही व्यक्ति स्वतंत्र रह सकता है। अतः विचारों की स्वतंत्रता नितान्त आवश्यक है। मनुष्य किसी सामाजिक व्यवस्था की मशीन का पुर्ज़ा होकर नहीं रह सकता, क्योंकि सत्य की खोज एवं स्वतंत्रता की इच्छा मनुष्य की उन्नति के मूलभूत कारण हैं। इन्हीं विचारों के आधार पर रॉय ने रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी के सन् १९४६ के महासम्मेलन में २२ सिद्धान्तों का आलेख प्रस्तुत किया जो रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी एवं पार्टी के विलीन होने पर रेडिकल मानववादी आन्दोलन की आधार शिला बने।

पार्टी–विहीन राजनीति

इन २२ सिद्धान्तों पर विचार कर रॉय एवं उनके साथी इस निर्णय पर पहुँचे कि राजनीतिक पार्टियाँ यद्यपि जनता के स्वार्थ का नारा देकर बनती हैं परन्तु कालान्तर में उन पार्टियों के स्वयं अपने निहित स्वार्थ उत्पन्न हो जाते हैं। यही नहीं, उस पार्टी पर भी एक छोटे–से घुट का अधिकार हो जाता है जो सत्ता को हथियाये रखना चाहता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक राजनीतिक पार्टी का उद्‌देश्य ही राज्य–सत्ता हथियाना होता है तथा उस सत्ता को हथियाने के लिये राजनीतिक पार्टियाँ एक से बढ़ कर एक वायदे करती हैं और लोगों की स्वार्थ–भावना, जातिवाद, वर्ग–भावना आदि को उकसा कर येन केन प्रकारेण सत्ता हथियाने का प्रयत्न करती हैं। राज्य–सत्ता आजाने के बाद यह पार्टियाँ कुर्सी पर चिपके रहने के लिये जन–स्वार्थ को ताक में रख कर अपनी पार्टी व अपने गुटवालों के संकुचित स्वार्थों की पूर्ति में लग जाती हैं। इसी से भ्रष्टाचार फैलता है। वर्तमान युग में राजनीतिक पार्टियाँ एवं पार्टियों के आधार पर चलने वाला राजतंत्र जनता की भलाई नहीं कर सकता। सही प्रजातंत्र तभी पनप सकता है जब कि अधिक से अधिक लोगों के स्वार्थों की पूर्ति की जा सके तथा व्यक्ति यह समझने लगे कि मूलतः उसके अपने स्वार्थ में और उसके समान व्यक्तियों के स्वार्थ में कोई अन्तर नहीं है, और सब मिल कर एक उद्देश्य को लेकर चलने से उन स्वार्थों की पूर्ति हो सकती है। परन्तु जनता को जागरूक किये बिन इस प्रकार का वास्तविक लोकतंत्र नहीं पनप सकता। वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना का एक ही

मार्ग है कि इस तरह के विचारों का जनता में प्रचार कर उनको शिक्षित किया जाय। राजनीति पार्टी–विहीन होनी चाहिये इस निर्णय पर पहुँचने पर सन् १९४५ में रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी की कलकत्ता कान्फ्रेंस में पार्टी को समाप्त कर दिया गया तथा रेडिकल मानववादी आन्दोलन का लक्ष्य देश में विचार क्रांति लाना बन गया। इस दृष्टि से इन्डियन रिनेसां इन्सटीट्यूट की देहरादून में स्थापना की गई तथा प्रति वर्ष रेडिकल मानववादी वहाँ गर्मियों में सम्मिलित होकर विचार–विमर्श करते हैं तथा मानववादी आन्दोलन को आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील हैं।

निधन

सन् १९५२ तक एम. एन. रॉय रेडिकल मानववादी आन्दोलन एवं पार्टी–हीन राजनीति के आन्दोलन के पथ–प्रदर्शक रहे। जून १९५२ में वे मसूरी में काफ़ी ऊँचाई के पहाड़ से फिसल कर गिर गये। उनके मस्तिष्क में गहरी चोट आई और वे कई दिनों तक बेहोश रहे। बीच–बीच में वे कुछ ठीक भी हुए परन्तु, पूर्णतया स्वस्थ न हो सके। २५ जनवरी १९५४ को रात्रि में उनका देहान्त हो गया। सुबह स्वतंत्र भारत के सातवें गणतंत्र दिवस की दुंदुभियां बज रही थीं और झंडे फहरा रहे थे तब जीवन पर्यन्त स्वतंत्रता की रक्षा के लिये लड़ने वाले महान क्रान्तिकारी एवं विचारक की अर्थी उठायी गयी। अनेक देशों की क्रान्तियों में भाग लेने वाला इस शताब्दी का भारत का सबसे रंगीन व्यक्तित्व (Colourful personality) उठ गया।

हमारे देश के चोटी के नेताओं से त्याग, विचार–शक्ति, चरित्र और सत्य की पूजा में किसी प्रकार कम न होते हुए भी मानवेन्द्रनाथ रॉय व उनके विचारों को बहुत कम देशवासी जान पाये। राजनीतिक सत्ता की छीना–झपटी व क्षुद्र स्वार्थों में उनके विवेक का स्वर सुनने का किसे अवसर था ? परन्तु, रॉय की विचारधारा आधुनिक युग की एक विशिष्ट चिन्ताधारा का प्रतिनिधित्व करती है जो मानवीय स्वतंत्रता की रक्षा के प्रयत्नों की जब भी आवश्यकता अनुभव की जाएगी मानवेन्द्रनाथ रॉय की विचारधारा हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत होगी।